५. भारतरत्न विश्वेश्वरय्या

डॉ.बालशौरि रेड्

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए ।

१. विश्वेश्वरय्या का पूरा नाम लिखिए ?

उत्तर: मोक्षगुंडम् विश्वेश्वरय्या ।

२. विश्वेश्वरय्या का जन्म कहाँ हुआ ?

उत्तर: कर्नाटक राज्य के कोलार जिले के अंतर्गत मुद्देनहल्ली नामक एक छोटे से गाँव में ।

३. विश्वेश्वरय्या किसके बड़े पाबंद थे ?

उत्तर: समय ।

४. विश्वेश्वरय्या किस उम्र में असिस्टेंट इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए ?

उत्तर: तेईस साल की उम्र में ।

५. विश्वेश्वरय्या ने किस बाँध के लिए आटोमैटिक गेटों का डिज़ाइन किया ?

उत्तर: पूना के निकट 'खडक वासला' नामक बाँध के लिए ।

६. नौकरी से निवृत्त होने के बाद विश्वेश्वरय्या किस राज्य के सलाहकार के रूप नियुक्त हुए ?

उत्तर: हैदराबाद ।

७. किस नदी में भयंकर बाढ़ आती थी ?

उत्तर: मूसी नदी ।

८. कावेरी नदी का बाँध किस नाम से मशहूर है ?

उत्तर: 'कृष्णराज सागर ।'

९. १९५५ में भारत सरकार ने विश्वेश्वरय्या को किस उपाधि से विभूषित किया ?

उत्तर: 'भारतरत्न' ।

१०. विश्वेश्वरय्या की मृत्यु कब हुई ?

उत्तर: १४ अप्रेल सन् १९६२ में ।

११. विश्वेश्वरय्या का जन्मदिन किस नाम से मनाया जाता है ?

उत्तर: 'इंजीनियर्स डे' ।

Scanned with CamScanner

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१. विश्वेश्वरय्या के बाल्य जीवन के बारे में लिखिए ।

उत्तर: विश्वेश्वरय्या का जन्म कर्नाटक राज्य के कोलार जिले के अंतर्गत मुद्देनहल्ली नामक एक छोटे-से गाँव में १५ सितंबर सन् १८६१ को हुआ था। इनका पूरा नाम मोक्षगुंडम् विश्वेश्वरय्या था। विश्वेश्वरय्या के माता-पिता बहुत ही गरीब थे। पढ़ाने-लिखाने की शक्ति उनमें नहीं थी। फिर भी विश्वेश्वरय्या के मन में पढ़ने की लगन थी। वे दिल लगाकर पढ़ते थे। गाँव में प्रारंभिक शिक्षा समाप्त कर विश्वेश्वरय्या हाईस्कूली शिक्षा पाने के लिए बेंगलूर पहुँचे ।

२. विश्वेश्वरय्या की शिक्षा के बारे में लिखिए ।

उत्तर: गाँव में प्रारंभिक शिक्षा समाप्त कर विश्वेश्वरय्या हाईस्कूली शिक्षा पाने के लिए बेंगलूर पहुँचे। मैट्रिक में उत्तीर्ण होने के बाद वे बेंगलूर में ही सेंट्रल कॉलेज में भर्ती हुए। वहीं से विश्वेश्वरय्या ने बी.ए. उत्तीर्ण किया। उस वक्त विश्वेश्वरय्या की उम्र केवल उन्नीस साल की थी। सेंट्रल कॉलेज के प्रिंसिपल की सिफारिशी से पूना के साइन्स कॉलेज प्रिंसिपल ने विश्वेश्वरय्या को अपने कॉलेज में भर्ती किया। यहाँ उनकी इंजीनियरिंग की शिक्षा प्रारंभ हुई। छात्र-वृत्ति भी मिली। वे निश्चिंत होकर अपना पूरा समय पढ़ाई में लगाने लगे ।

३. विश्वेश्वरय्या की प्रसिद्धि तथा पदोन्नति देख कुछ इंजीनियर क्यों जलते थे ?

उत्तर: विश्वेश्वरय्या की ख्याति तथा पदोन्नति देख कुछ इंजीनियर उनसे ईर्ष्या करने लगे थे। इसके दो कारण थे, एक तो विश्वेश्वरय्या की उम्र उस वक्त केवल सैंतालीस की थी और दूसरी बात वे अनेक पुराने तथा सीनीयर इंजीनियरों से वेतन तथा पद की दृष्टि से भी आगे बढ़ गये थे। वे सूपरिन्टेंडिंग इंजीनियर पहले ही से थे। तिस पर हर बात में उनकी सलाह ली जाती थी। इस प्रकार अपने ही पेशे के लोगों में असन्तोष देख विश्वेश्वरय्या ने एक दिन अचानक नौकरी से इस्तीफा दे दिया ।

४. हैदराबाद नवाब के सामने कौन-सी मुसीबत थी? उसका समाधान विश्वेश्वरय्या ने कैसे किया ?

उत्तर: हैदराबाद नवाब के सामने एक मुसीबत आ खड़ी थी। वह थी मूसी नदी में बाढ़। हर वर्ष मूसी में भयंकर बाढ़ आती थी। इस वजह से खूब तबाही होती थी। उस बाढ़ का पानी हैदराबाद नगर में घुस आता था, जिससे सारे काम-काज बन्द हो जाते थे। विश्वेश्वरय्या ने मूसी नदी पर काबू पाने की योजना बनाई, बाँध भी बनवाया। साथ ही हैदराबाद नगर के लिए पानी तथा नालियों का भी बड़ा अच्छा इन्तजाम किया। हैदराबाद नगर को सुन्दर बनाने की योजना बनाई। नगर के बीच 'बाग-ए-आम' नाम से मशहूर एक सुन्दर पब्लिक गार्डन इन्हीं की योजना का फल है। यह सुन्दर नगर आज आन्ध्र प्रदेश की राजधानी है ।

Scanned with CamScanner

५. मैसूर राज्य के विकास में विश्वेश्वरय्या के योगदान के बारे में लिखिए ।

उत्तर: मैसूर राज्य के विकास में विश्वेश्वरय्या के प्रमुख कार्य तीन कहे जा सकते हैं । उनमें प्रमुख है–कावेरी पर बाँध । यह बाँध "कृष्णराज सागर" नाम से मशहूर है । इस बाँध के निर्माण से जहाँ उद्योगों के लिए बिजली प्राप्त हुई, वहीं पर सिंचाई के लिए पानी भी मिला । मैसूर राज्य के विकास में कृष्णराज सागर का प्रमुख स्थान है । मैसूर को वास्तव में इन्द्रपुरी बनाने का श्रेय विश्वेश्वरय्या जी को प्राप्त है । नगर को सुन्दर बनाने की दिशा में 'बृंदावन उद्यान' उन्हीं की योजना का सुन्दर परिणाम है । दीवान के पद पर काम करते श्री विश्वेश्वरय्या ने मैसूर की शासन–व्यवस्था में भी कई सुधार किये । पंचायतों की व्यवस्था की । विश्वेश्वरय्या ने मैसूर राज्य के लिए अपना एक बैंक भी बनाया । इस प्रकार राज्य के आर्थिक विकास में उनकी देन अद्‌भुत है । शिक्षा के क्षेत्र में भी विश्वेश्वरय्या ने राज्य की अभूतपूर्व उन्नति की । विश्वेश्वरय्या ने मैसूर राज्य के लिए एक अलग विश्वविद्यालय स्थापित करना चाहा । इस प्रयत्न में उन्हें अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा । आखिर वे अपने प्रयत्न में सफल हुए ।

६. विश्वेश्वरय्या के गुण–स्वभाव का परिचय दीजिए ।

उत्तर: विश्वेश्वरय्या समय के बड़े पाबन्द थे । वे एक कर्मयोगी थे । उन्होंने जीवन पर्यन्त विश्राम नहीं लिया । समय पर अपने सभी काम करते थे । व्यायाम करते थे । अपने समय का सदुपयोग करते थे । वे सदा मेहनत करते थे, दूसरों से भी यही आशा रखते थे । उनका विश्वास था कि जिस दिन हम अपने आलसीपन को त्याग देंगे उसी दिन हमारे देश का भी विकास होगा । विश्वेश्वरय्या सेवा भाव को अत्यंत पवित्र आचरण मानते थे । ज़िन्दगी भर देश की तथा मानव समाज की सेवा में वे लगे रहे । विश्वेश्वरय्या का चरित्र आदर्शपूर्ण था । वे विनयशील तथा साधु प्रकृति के पुरुष थे । ईमानदारी तो उनके चरित्र की अटूट अंग ही थी । असाधारण प्रतिभा रखते हुए भी उन्होंने कभी गर्व का अनुभव नहीं किया । वे सदा देश के विकास के ही सपने देखते रहे ।

Scanned with CamScanner